राजस्थानी लघु चित्रकला की विभिन्न शैलियों में चित्रित रसिकप्रिया ग्रंथ में नायिकाभेद

प्रीति यादव

रिसर्च स्कॉलर
कला इतिहास विभाग कला संकाय
काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी

नवहू रस को भाव बहु तिनके भिन्न विचार।
सबको केशवदास हरि नायक है शृंगार।।
(रसिकप्रिया)

सारांश

कला जीवन की मौलिक दृष्टि है और सौन्दर्य उसका आधार है। सौन्दर्य का वास्तविक सम्बन्ध 'भोग' तत्त्व से है, दूसरा 'रूप' से तथा तीसरा 'अभिव्यक्ति' से। एक तरफ जहाँ कला का अर्थ होता है– ''रूपात्मक सृजन'' और काव्य में शब्द के माध्यम से सौन्दर्य की रचना होती है, दूसरी तरफ भारतवर्ष में काव्य के वर्ण लेखन को चित्रकला के समान महत्व प्राप्त हुआ है। मध्यकाल में तो इस विशिष्ट लेखन कला के क्षेत्र में अनेक कलाकार सिद्धहस्त हो चुके थे। उस काल में तैयार की गई कल्पसूत्र, गीतगोविन्द, भागवतपुराण, रसिकप्रिया, कविप्रिया आदि पाण्डुलिपियाँ काव्य में प्रयुक्त वर्णों की चित्रकलावत् मूर्तता सिद्ध करने का महत्त्वपूर्ण साधन है।

हिन्दी साहित्य का गौरवशाली काल रीतिकाल रहा है। इस काल के काव्य में राग है, अनुराग है, रस है और जीवन का उल्लास है। केशवदास को रीतिकाल का आविष्कारक आचार्य एवं उनका ग्रन्थ 'रसिकप्रिया' रीतिकाल का प्रसिद्ध ग्रन्थ माना जाता है, जिसमें केशव ने नायिकाभेद पर बहुत ही सुन्दर प्रकाश डाला है।

'रसिकप्रिया' ऐसे रूपचित्रों की सिरोमणि है, जिनके आधार पर राजस्थानी शैली के चितेरों ने राधा–कृष्ण की प्रेमत्व छवि को अपनी शैलीगत विशेषताओं के साथ अंकित किया है। कृष्ण और राधा के अंग–प्रत्यंगों की बनावट, उनके साजो–शृंगार, प्रकृति का सुनहरा वातावरण, पशु–पक्षियों का चित्रण आदि का इन रसिकप्रिया पर आधारित चित्रों में अंकित किया गया है।

अतः मैं यहाँ पर केशवकृत रसिकप्रिया पर आधारित नायिकाभेद पर बनी राजस्थानी लघुचित्रों के विभिन्न शैलियों में वर्णित उनकी विशेषताओं पर प्रकाश डालने का एक छोटा सा प्रयास कर रही हूँ, जिससे इनके चित्रण के विषय में कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्यों का भरतीय लघु चित्रकला के परिप्रेक्ष्य में संवर्धन हो सकेगा।

मुख्य शब्द : रसिकप्रिया, नायिका भेद, शृंगार रस, विरहिणी नायिका, सौन्दर्य।

उद्देश्य :

- शोध–पत्र का उद्देश्य यह है कि– राजस्थानी शैली के रसिकप्रिया में नायिकाभेद पर आधारित चित्रों में अभिव्यक्ति उनके आन्तरिक सौन्दर्य और कलापक्षीय विवेचन का प्रयास किया गया है।
- नायिका के भिन्न–भिन्न अवस्थाओं को उनकी मनोदशा के अनुसार रूप, वर्ण, लावण्य, जाति, धर्म का प्रयोग कर समझाने का प्रयास किया गया है।

भूमिका :

पोथी चित्रण एवं लघुचित्रण की दृष्टि से राजस्थानी चित्रशैली सर्वाधिक समृद्ध रही है। राजस्थान की धरती जहाँ वीर प्रसविनी रही है, वहीं इसका कलात्मक वैभव भी अद्वितीय रहा है। वाचस्पति गैरोला द्वारा लिखित पुस्तक ''भारतीय चित्रकला'' में लिखा है–

''भारतीय चित्रकला के इतिहास में राजस्थान के कलाकारों की देन अनुपम तथा अद्वितीय है। मोहक वातावरण और प्राकृतिक रूप निर्माण के कारण, कला, साहित्य एवं काव्य के उद्‌भव के लिए राजस्थान की धरती स्वाभाविक रूप से उपर्युक्त रही है।''[1]

सोलहवीं शताब्दी की चित्रकला और साहित्य पर वैष्णव सम्प्रदाय का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। इस आन्दोलन के कारण राजस्थानी शैली की कला, काव्य, साहित्य पर बड़ा असर पड़ा।

कालक्रमानुसार रसीकप्रिया केशवदास जी की द्वितीय रचना है, जिसका प्रणयन ओरछा नरेश राजा इन्द्रजीत सिंह के आग्रह एवं प्रेरणा से हुआ था।

''सम्वत् सोलह से बरष, बीते अठतालीस।
कार्तिक सुदि तिथि सप्तमी, वार बरनि रजनीस।।''[2]

वि0सं0 (1591 ई0) में कार्तिक शुक्ल सप्तमी, चंद्रवार के दिन प्रीति तथा बुद्धि को एकत्र कर विविध प्रकार के ज्ञानों से भरी केशवदास ने रसिकों के लिए 'रसिकप्रिया' की रचना की थी।

रस ग्रन्थ के सोलह प्रकाशों में से चौदह प्रकाश श्रृंगार व्याख्या से सम्बन्धित है। इन चौदह प्रकाश में से आठ प्रकाशों में नायक–नायिका प्रकरण हैं, जिसमें से तृतीय प्रकाश में नायिकाभेद का उल्लेख किया गया है।

रसीकप्रिया, रस विवेचन सम्बन्धी ग्रन्थ है, जिसकी रचना मुख्यतः काव्य रसिकों के लिए ही हुई है। यह एक रसग्रन्थ है न कि नवरस का ग्रन्थ। यह श्रृंगार रस का ग्रन्थ है, जिसे केशव ने दो भेद दिये– संयोग और वियोग। इसमें राधा को नायिका और कृष्ण को नायक मानकर श्रृंगार को आलम्बन के रूप में कवियों ने अंकित किया। सर्वप्रथम संस्कृत साहित्य में भरत के नाट्यशास्त्र में नायिकाभेद का उल्लेख मिलता है। तत्पश्चात् वात्स्यायन का कामसूत्र, कक्कोक का रतिरहस्य, धनंजय का दशरूपक, रूद्रट का काव्यालंकार, भानुदत्त की रसमंजरी आदि प्रमुख रहे।[3]

नायिकाभेद :

नायिकाभेद को केशवदास ने कामशास्त्र का विषय बताया है। पवर्ती ग्रन्थ 'कामसूत्र', 'रतिरहस्य', 'पंचसायक' आदि में नायिकाभेद को विस्तार से बताया गया है। इन ग्रन्थों में नायिका के अनेक भेदों पर चर्चा हुई है।[4] नायिकाभेद नारी के ही विभिन्न भाव, लावण्य तथा आवेगों का प्रतिरूप है।

केशवदास ने जाति, धर्म, परिस्थिति एवं गुण के आधार पर नायिका के भेदों का निरूपण किया है, जिसमें से जातिगत एवं धर्मानुसार वर्गीकरण रसिकप्रिया के तृतीय प्रकाश में एवं परिस्थिति तथा गुणानुसार सातवें प्रकाश में किया है।

- केशवदास ने जाति के अनुसार नायिका वर्णन इस प्रकार किया है– 1. पद्मिनी, 2. चित्रिणी, 3. शंखिनी, 4. हस्तिनी।
- धर्मानुसार, केशव ने नायिका को दो भागों में विभाजित किया– 1. स्वकीया, 2. परकीया।
- स्वकीया के तीन भेद बताये– 1. मुग्धा, 2. मध्या, 3. प्रौढ़ा।
- मुग्धा को चार भागों में बाँटा– 1. नवलवधू, 2. नवयौवना, 3. नवलअनंगा, 4. लज्जाप्रायरति।
- मध्या के चार भेद किये– 1. आरूढ़ यौवना, 2. प्रगल्भवचना, 3. प्रादुर्भूतमनोभवा, 4. सुरतिविचित्रा।
- इन चारों नायिकाओं के भी तीन–तीन भेद किये गये– धीरा, अधीरा तथा धीराधीरा।
- प्रौढ़ा नायिका को चार भागों में विभाजित किया– 1. समस्तरसकोविदा, 2. विचित्रविभ्रमा, 3. आक्रामित, 4. लब्धापति।
- इन समस्त चारों नायिकाओं के भी तीन–तीन भेद बताये गये– 1. धीरा, 2. अधीरा, 3. धीराधीरा।
- परकीया नायिका के दो भद बताये गये– 1. ऊढ़ा, 2. अनूढ़ा।
- केशवदास ने परिस्थितिनुसार नायिका के आठ भेद बताये– 1. स्वाधीनपतिका, 2. उत्का, 3. वासकसज्जा, 4. अभिसंधिता, 5. खंडिता, 6. वासकसज्जा, 7. विप्रलब्धा, 8. अभिसारिका।
- अभिसारिका नायिका को तीन भागों में बाँटा– 1. प्रेमाभिसारिका, 2. गर्वाभिसारिका, 3. कामाभिसारिका।
- केशवदास ने नायिका को गुणों के आधार पर तीन भेद बताये हैं– 1. उत्तमा, 2. मध्यमा, 3. अधमा।[5]

केशवदास ने इन नायिकाभेदों का गुणनफल करके 360 प्रकार की नायिकाओं को माना है।[6] इस गुणनफल को निम्न प्रकार से भी स्पष्ट किया है–

---

[1]गैरोला, वाचस्पति. भारतीय चित्रकला, पृ0 157
[2]रसिकप्रिया, प्रथमप्रकाश, 'परिचय', छंद संख्या–11
[3]Bahadur, K.P. Rasikapriya of Keshavadasa, p. 68
[4]सिंह, डॉ0 विजयपाल. केशव का आचार्यत्व, पृ0 110
[5]रसिकप्रिया, तृतीय प्रकाश, पृ0 83–84
[6]सिंह, डॉ0 विजयपाल, केशव का आचार्यत्व, पृ0 210

स्वकीया = 3×4 प्रकार = 12, 12+2 परकीया = 14, 14+1 सामान्य = 15, 15×8=120, 120×3 गुणानुसार = 360। केशवदास ने कामशास्त्र और काव्यशास्त्र दोनों ही स्त्रोतों से इस नायिकाभेद निरूपण के लिए सामग्री ली है।[7] इस प्रकार केशवदास ने नायिकाभेद का वर्णन किया।

अब हम बात करेंगे कि राजस्थानी लघु चित्रकला में 'रसिकप्रिया' में नायिकाभेद का वर्णन चित्रकारों ने अपनी तूलिका के द्वारा किस प्रकार से किया है।

प्रच्छन्न स्वाधीनपतिका :

केसव जीवन जो ब्रज को पुनि जीवहु में अति बापहिं भावै।
जापर देव–अदेव–'कुमारिनि वारत माइ न बार लगावै।
ता हरि पै तूँ गँवार की बेटी महावर पाई भवाँइ दिवावै।
हौं तौ बची अब हाँसिहीं ऐसें और जौ देखै तौ उतरू आवै।[8]

केशवकृत 'रसिकप्रिया' के सातवें प्रकाश में वर्णित प्रच्छन्न स्वाधीनपतिका का उल्लेख किया गया है। जो अपने गुणों से नायक को वश में कर लेती है, वही स्वाधीनपतिका नायिका कहलाती है।[9] राधा की सुन्दर व बड़ी–बड़ी आँखें, विशाल भाल, पीठ पर झूलती वेणी, गौरवर्ण, नीलवसन की फरिया, कृष्ण के मन पर ऐसा प्रभाव डालते हैं कि कृष्ण देखते ही मंत्रमुग्ध हो जाते हैं।

राधा की सखी कह रही है कि हे सखी! कृष्ण तो ब्रजवासियों के प्राण हैं, जिनके पिता जी उन्हें प्राणों से भी अधिक प्यारा समझते हैं। माता यशोदा भी नर–कुमारियों को न्यौछावर करने में तनिक नहीं लगाती, ऐसे श्रीकृष्ण से तू ग्रामवासी की लड़की होकर पैरों को झाँवे से रगड़वाकर महावर लगवा रही हो। मैं तो इस दृश्य को देखकर हंस के टाल रही हूँ, यदि कोई अन्य देख लेगा तो क्या तुझसे इसका उत्तर देते बनेगा?[10]

आमेर शैली पर यह चित्र आधारित है (चित्र)। इसमें कलाकार ने विषय की भावपूर्ण अभिव्यक्ति दी है। चित्र के अग्रभूमि में नायिका एक ऊँचे आसन पर विराजमान है और नायक (श्रीकृष्ण) नीचे बैठकर नायिका के श्रीचरणों में महावर लगाने में तल्लीन है। कृष्ण केल पीछे खड़ी नायिका की सखी के तीखे उलाहने का राधा के मन पर कोई प्रभाव नहीं दिखता। चित्र में नायक–नायिका की निकटता का मधुर दृश्य देखकर दर्शक भाव–विभोर होने लगता है। इस चित्र में नायक को पीतवस्त्र पहने एवं सुनहरा पटुका धारण किये वह सिर पर किरीट मुकुट पहने चित्रित किया गया है। आभूषणों में गले में मोतियों की माला, हाथों में कड़े व कानों में बुँदे एवं अन्य जड़ाऊ आभूषण पहने दिखाया गया है। नायिका को लहँगा, पारदर्शी चुनरी व कंचुकी पहने दर्शाया गया है। आभूषणों में गले में मोतियों की माला सिर पर बोरला, नाक में नथ, अँगुलियों में हाथफूल, ललाट पर जड़ाऊ बिन्दी चित्र में एक भवन का अंकन किया गया है, जिसमें राजपूती स्थापत्य कला का पूर्ण परिचय प्राप्त होता है। आमेर शैली में छाया प्रकाश के अंकन में रंगों की विभिन्न तानों का प्रयोग किया गया है।

प्रकाश उत्का नायिका :

''सुधि भूलि गई, भुलए किधौं काहू कि भूलेई डोलत बाट न पाई।

[7]Bahadur, K.P. Rasikapriya of Keshavadasa, p. 69-75
[8]रसिकप्रिया, सप्तम् प्रकाश (अष्टनायिका वर्णन), छंद सं0–5
[9]सिंह, डॉ0 विजयपाल, केशव का आचार्यत्व, पृ0 234
[10]व्यास, चिन्तामणि, रसिकप्रिया, पृ0 35

भीत भए किधौं केसव काहू सों, भेंट भई कोऊ भामिनि भाई।
मन आवत हैं किधौं आइ गए, किधौं आवहिंगे सजनी सुखदाई।
अब आए न नंदकुमार बिचारि, सु कौन बिचार अबार लगाई।।"[11]

उत्का नायिका वह होती है, जो शंकित होती है। नायिका के विरह की सीमा असीम है। अतः वह सखी से कहती है कि वह (प्रियतम) भूल तो नहीं गए कि यहाँ उनकी प्रिया प्रतीक्षा कर रही है। वह कहीं मार्ग से भटक तो नहीं गए? या किसी परस्त्री ने उनको भरमा तो नहीं रखा है, जिस पर उनका मन प्रभावित हो गया हो। हे सखी जरा देखो तो वह आ रहे हैं या फिर वह अभी मार्ग में हैं या हो सकता है उन्होंने अभी यात्रा शुरू ही न की हो। नायक के देर रात्रि तक न आने के कारण राधा के हृदय की व्याकुलता बढ़ ही रही थी कि अर्द्धरात्रि होते–होते कृष्ण उसके पास आ पहुँचे।

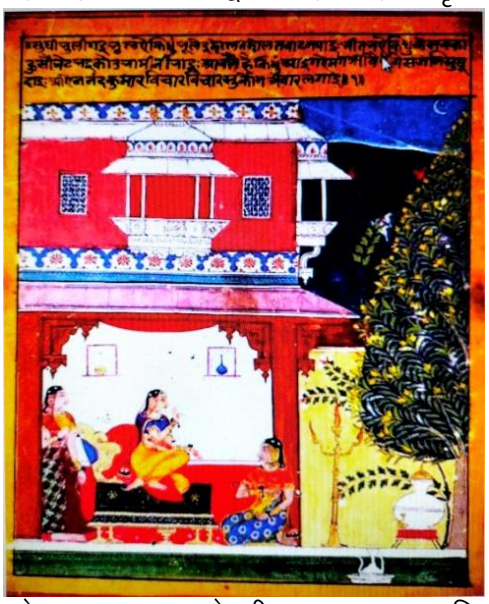

इस चित्र में नायिका राजपूती स्थापत्य के सुन्दर भवन के भीतर आसन पर विराजमान है। नायिका अपने सम्मुख बैठी सखी से अपनी चिन्ता व्यक्त करती हुई दिखाई गई है। कक्ष के बाहरी भाग में पुष्पगुच्छों से पल्लवित आम्रवृक्ष के नीचे एक पूर्णकलश प्रिया के मन के प्रेमोन्माद को व्यक्त करता हुआ प्रतीत हो रहा है। चित्र के ऊपरी भाग में, स्वच्छ नीले रंग के आकाश में चमकता अर्द्धचन्द्र रात्रि के सुनहरे वातावरण को दर्शाता है।

<u>वासकसज्जा नायिका</u> :
चंदन बिटप बपु कोमल अमल दल,
कलित ललित लता लपटी लवंग की।
केसौदास तामें दुरी दीप की सिखा सी दौरि,
दुखति नीलबास दुति अंग अंग की।
पौन पानी पंछी पसु बस सब्द जित जित
होइ तित तित चौंकि चाहै चोप संग की
नंदलाल–आगम बिलोकें कुंजजाल बाल
लीनी गति तेहीं काल पंजर–पतंग की।[12]

अर्थात् एक सखी दूसरी से कह रही है कि हे सखी! जहाँ चंदन के वृक्षों पर कोमल और स्वच्छ पत्तों से भरी हुई लवंग की सुन्दर लताएँ लिपटी थी, उन्हीं में दीपशिखा–सी राधा दौड़कर जा छिपी है। लाल साड़ी में वह अपने अंग–प्रत्यंग को छिपा ली है। समीर, जल, पक्षी अथवा पशु की आहट जिधर से होने लगती है, उधर से हीवह अपने प्रियतम के आने की उत्कंठा से चौंक–चौंक कर उस दिशा में देखने लगती है। श्रीकृष्ण के आगमन की प्रतीक्षा में निकुंज को निहार कर नायिका पिंजड़े में बंद पक्षी जैसी स्थिति का अनुभव करने लगी है।[13]

[11]रसिकप्रिया, सातवाँ प्रकाश (अष्टनायिका वर्णन), छंद सं0–9
[12]रसिकप्रिया, सप्तम् प्रकाश (अष्टनायिका वर्णन), छंद सं0–11
[13]व्यास, चिन्तामणि, रसिकप्रिया, पृ0 65

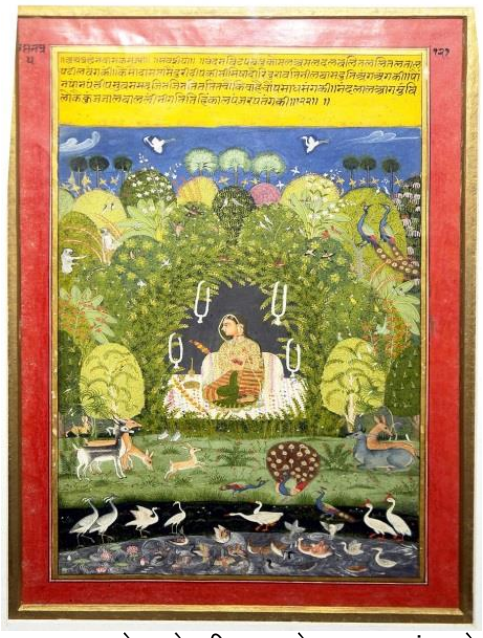

रसिकप्रिया के इस कवित्त को बूंदी के कलाकार ने बड़े ही प्रभावोत्पायक ढंग से प्रस्तुत किया है। नायिका शृंगार करके चित्र के केन्द्र में अंकित लताकुंज के मध्य पुष्प आच्छादित सेज पर संकोच करती हुई विराजमान है। प्रिय मिलन के आनन्द की उत्सुकता से उत्साहित, पास रखे इत्रदान और पानदान की ओर भी उसका ध्यान नहीं है, वह तो अपने प्रिय से मिलन के आनन्द में डूबी ही जा रही है।

प्रच्छन्न खंडिता नायिका :

''आँखिनि जौ सूझत न काननि तौ सुनियत,
केसौदास जैसे तुम लोकनि में गाए हौ।
बंस की बिसारी सुधिकाक ज्यों चुनत फिरौ,
जूठे सीठे सीध सठ–ईठ दीठ ठाए हौ।
दूरि दूरि करतहूँ दौरि दौरि गहौ पाई,
जानौ न कुठौरू ठौरू जानि जिय पाए हौ।
काको घर घालिबे कौं बसे कहाँ घनस्याम,
धूधू ज्यौं धुसन प्राप्त मेरे गृह आए हौ।।''[14]

अर्थात् नायिका, नायक को ताड़ना देते हुये कहती है कि तुम्हारे कहे अनुसार मेरी आँखों को ठीक से दिखाई नहीं देता परन्तु कानों से तो वह सब बातें सुनती हैं, जिनके विषय में दुनिया तुम्हारी चर्चा करती है। आपने अपने कुल को भी लज्जा से डुबा दिया। आप एक कौए के समान छोटे स्तर से भी तत्त्वहीन हो इधर–उधर अन्नकण चुगते फिरते हो। आप में और शठों में कोई अन्तर नहीं रह गया है। जितनी बार मैं तुम्हे दुत्कारती हूँ उतनी ही बार मेरे पैर पकड़ने लगते हो। आप कभी ठौर–कुठौर में अन्तर समझोगे ही नहीं, यह मैंने भली–भांति समझ लिया है। भोर होते ही आप मेरे घर में घुसते चले आ रहे हो, क्या आपको तनिक लज्जा भी नहीं आती?

[14]रसिकप्रिया, सप्तम् प्रकाश (अष्टनायिका वर्णन), छंद सं0–17

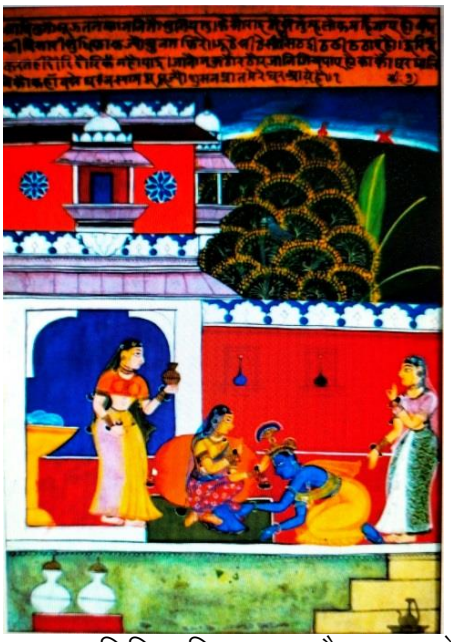

यह चित्र मेवाड़ शैली का है, जो साहबदीन द्वारा चित्रित किया गया है। भवन के बाहर आँगन के दृश्य को दिखाया गया है, जहाँ नायक, नायिका के पैरों में गिरकर उनसे विनती करते हुए अंकित है। नायिका (राधा) नायक (कृष्ण) के रात्रि कहीं अन्य स्त्री के साथ बिताने के कारण रूष्ठ हैं और नायक द्वारा पैरों में गिरकर क्षमा माँगने पर भी नहीं मान रही है। इस चित्र में चित्रकार में दोषी के अवस्था को बड़े ही मार्मिक ढंग से चित्रित किया है।

नायक के पीछे नायिका की सखी, नायिका को क्रोध त्याग देने का निवेदन करती दिखाई गई है वहीं एक अन्य सखी नायिका के समीप जल का पात्र लिए खड़ी है। अग्रभूमि में पूर्णकलश का जोड़ा नायिका के हठ करने पर भी श्रृंगारिक भाव की विद्यता का सूचक है।

मेवाड़ शैली के इस चित्र में लाल, हरा, नीला, पीला आदि चटख रंगों का अधिकांशतः प्रयोग किया गया है। आकाश को नीले सपाट रंग में सफेद रंग की संगति से दिखाया गया है। स्त्री आकृतियों की वेशभूषा में लहँगा, कंचुकी एवं पारदर्शी ओढ़नी ओढ़े दिखाया गया है।

<u>प्रच्छन्न कामाभिसारिका नयिका</u> :

उरझत उरग चपत चरननि फन,
देखत बिबिध निसिचर दिसि चारि के।
गनति न लागत मुसलधार सुनत न,
झिल्लीगन–घेष निरघोष जल–धारि के।
जानति न भूषन गिरत, पट फाटत न,
कंटक अटकि उर उरज उजारि के।
प्रेतनि की पूछैं नारि कौन पै तैं सीख्यो यह,
जोग कैसो सारू अभिसारू अभिसारिके।।[15]

अर्थात् प्रेत स्त्रियाँ कनक–रज रूपी राधा से पूछ रही हैं कि हे सुन्दरी! प्रेम–क्षुधा के लिए इस मूसलाधार वर्षा और अंधकार में जाते समय तुमने अपने पैरों में उलझे सर्पों के फनों को बड़ी निर्भिकता से कुचल दिया। चारों ओर से निशाचरों की डरावनी आकृतियाँ भी तुम्हे भयभीत करके देख चुकी। वर्षा से उन्मत्त झींगुरों की ध्वनि और जल–प्रवाह की भयानक आवाजों का भी तुम्हारे हृदय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। मंजिल की ओर अग्रसर होते हुए तुम्हें अपने आभूषणों के गिरने का भी भान नहीं हुआ। कांटों में उलझकर वस्त्रों के फटने और स्तनों में शूलों के चुभने पर उत्पन्न कष्ट को भी तुमने सहज ही सह लिया। इस प्रकार की एकाग्रता और तन्मयता को देख वे सब राधा से पूछती हैं कि हे अभिसारिके! तुमने योग साधना के तत्त्वों से पूर्ण यह अभिसार किससे सीखा है।

[15]रसिकप्रिया, सप्तम् प्रकाश (अष्टनायिका वर्णन), छंद सं0–31

इस चित्र में नायिका मानो सुध–बुध खोकर अपने प्रियतम से मिलने ऊँची–नीची पथरीली चट्टानों पर अनेक भयावह सर्पों, प्रेतों, वन पशुओं और वृक्षों की घनी छटा के मध्य से अपने प्रियतम की ओर जाते चित्रित किया गया है। नायक बायीं ओर ऊपरी कोने में लताकुंज के मध्य बैठे नायिका के आगमन को प्रतीक्षा करते दिखाया गया है।

रसिकप्रिया से सम्बन्धित अधिकतर चित्र कृष्ण लीला से है। अपने प्रियतम से मिलने जाती नायिका का सुन्दर चित्रण, नायक की राह देखती नायिका व विविध परिस्थितियों में कृष्ण व राधा का नायक–नायिका रूप का दुलर्भ चित्रण राजस्थानी लघु चित्रकला को ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण बना देता है। रसिकप्रिया पर आधारित समस्त लघुचित्र आज विश्वभर के संग्रहालयों में संग्रहित है।

केशव द्वारा वर्णित वातावरण में आलौकिकता, प्राकृतिक सुषमा का सुरम्य वर्णन, मनोभावों की विविधता, नारी की कमनीयता और उसका लावण्ययुक्त यौवन इनके काव्य की प्रमुख विशेषता रही। प्रेम और श्रृंगार, संयोग व वियोग की परिस्थितियों में दिखाई गई नायिका के सौन्दर्य का अंकन इस राजस्थानी लघु चित्रकला की विभिन्न शैलियों में चित्रित रसिकप्रिया में नायिकाभेद का मुख्य आधार रहीं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. Archer, W.G. The Loves of Krishna, In Indian Painting and Poetry, London : Allen and Union, 1957.
2. Bahadur, K.P. Rasikapriya of Keshavadas, Delhi : Motilal Banarasidas, 1972.
3. Gray, Basil. Rajput Painting, London : Faber and Faber, 1938.
4. Mathur, N.L. Indian Miniatures, New Delhi : N.L. Mathur, 1982.
5. Sodhi, Jiwan. Bundi Painding, New Delhi : Shakti Malik Abhinav Publication, 1999.
6. दास, राय कृष्ण. भारत की चित्रकला, इलाहाबाद : लीडर प्रेस, 1969.
7. गैरोला, वाचस्पति. भारतीय चित्रकला, इलाहाबाद : मित्र प्रकाशन, 1963.
8. व्यास, चिन्तामणि. रसिकप्रिया, झाँसी : गीता पब्लिशर्स, 1988.
9. सिंह, डॉ0 विजयपाल. केशव का आचार्यत्व, नई दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1998.
10. मिश्र, विश्वनाथप्रसाद. रसिकप्रिया, वाराणसी : कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, 2015.

चित्रसूची :

1. प्रच्छन्न स्वाधीनपतिका नायिका (7/5) (अप्रकाशित), आमेर एवं मुल मिश्रित शैली (1610–15 ई0) 12.5×13.1 सेमी0, संग्रह– बोस्टन म्यूजियम, अमेरिका।
2. प्रकाश उत्का नायिका (7/9) (अप्रकाशित). मेवाड़ शैली (1650 ई0) 28.5×21 सेमी, संग्रह– ज्ञान प्रवाह ऑरगनाइजेशन।
3. प्रच्छन्न वासकसज्जा नायिका (7/11). बूंदी शैली (1700–1725 ई0) 38.5×25.1 सेमी, संग्रह– राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली।

4. प्रच्छन्न खंडिता नायिका (7/17) (अप्रकाशित). मेवाड़ शैली (1628–1652 ई0) 27×22 सेमी, संग्रह– राजकीय संग्रहालय, उदयपुर।
5. प्रच्छन्न कामाभिसारिका नायिका (7/31). मेवाड़ शैली (1628–52 ई0) 27×22 सेमी, संग्रह– राजकीय संग्रहालय, उदयपुर।